डॉ0 प्रजापति सिंह

सहायक प्राध्यापक : शिक्षाशास्त्र विभाग

राजेन्द्र मिश्र महाविद्यालय, सहरसा, बिहार–852201

(C-05) विषयः अनुशासन और विषयों की समझ (Understanding Disciplines & Subjects)

पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्या (Curriculum & Syllabus)

इकाई की रूपरेखा

१.० उद्देश्य

१.१ प्रस्तावना

१.२ पाठयक्रम एवं पाठ्यचर्या

१.३ अपनी प्रगति की जॉच करें

१.४ सारांश

१.४ अभ्यास प्रश्न/चिन्तनात्मक प्रश्न

१.५ प्रगति की जॉच के लिए उत्तर

१.६ सन्दर्भ/अन्य अध्ययन

1.0 उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- पाठयक्रम के अर्थ को समझकर बता सकेंगे।
- पाठ्यक्रम को बनाने बिन्दुओं को समझकर बता सकेंगे।
- पाठ्यक्रम के मानदण्ड को समझकर बता सकेंगे।
- पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्त समझकर बता सकेंगे।
- पाठ्यचर्या का अर्थ एवं विकास को समझकर बता सकेंगे।
- पाठयक्रम एवं पाठ्यचर्या के अन्तर को समझकर बता सकेंगे।

Dr. Praja Pati Singh

1.1 प्रस्तावना: राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 के अनुसार पाठ्यपुस्तकों में इस प्रकार की सामग्री संकलित की जाए जो बच्चों के ज्ञान, समझ, दृष्टिकोण और कौशलों को बनाने–संवारने में मददगार हो सके। बच्चेां के स्थानीय परिवेश व उसके अनुभवों को भी सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में महत्व देते हुए आगे बढनें के अवसर पाठ्यपुस्तक में होने चाहिए। पाठ्यपुस्तकें ऐसी हों जो अपने विषय की प्रकृति से संबध रखे और बच्चे उसको पढ़ते हुए अपना सोचना विचारना जारी रख सकें न कि ज्ञान को मात्र प्रदत्त के रूप में ग्राहय करें। पाठ्यपुस्तकों के पाठ्यक्रम में क्या सैद्वांतिक व प्रायोगिक विषयवस्तु रखी जाए जिससे विशिष्ट उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए ज्ञान, कौशल और अभिवृत्तियों को खास बढ़ावा मिले सके। बच्चों के सभी अनुभव जो विद्यालय एवं घर के वातावरण में, समुदाय के साथ या फिर अन्य माध्यमों से होते हैं आदि सभी का सम्पूर्ण समावेश पाठ्यक्रम कहा जाता है। अतः पाठ्यक्रम का चयन शिक्षार्थी की मानसिक आयु, अभिरूचि का स्तर और शिक्षार्थी के वर्तमान एवं भविष्य के जीवन में उपयोगिता के आधार पर किया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम के लिए स्कूली तंत्र में पाठ्यपुस्तक सीखने के एक माध्यम के रूप में प्रावधानित की जाती है। पाठ्यक्रम में पाठ्यचर्या का भी होना अत्यंत आवश्यक होता है जिनकी रचना कुछ विशिष्ट शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए की जाती है। उद्दश्यों का एक ऐसा समूह जिसमें यह शामिल हो कि कक्षानुरूप विषयवस्तु के लिहाज से क्या पढाया जाए कि ज्ञान,कौशल एवं अभिवृत्ति को बढ़ावा मिलें इन शैक्षिक उद्दश्यों की प्राप्ति विद्यार्थी किस रूप में कर रहे हैं, इसको जॉचने के लिए पाठ्यचर्या में मूल्यांकन एवं आकलन योजना भी होनी चाहिए। इस इकाई में हम उपरोक्त बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

1.2 पाठ्यक्रम (Curriculum) एवं पाठ्यचर्या (Syllabus)

(अ) पाठ्यक्रमः

यह एक व्यापक (broader) शब्द है, जो शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता है। बच्चों के सभी अनुभव जो विद्यालय के वातावरण में, घर के वातावरण में, समुदाय के साथ या फिर अन्य माध्यमों से प्राप्त अनुभव आदि सभी का सम्पूर्ण समावेश पाठ्यक्रम कहलाता है। पाठयक्रम का निर्धारण अकादमिक प्राधिकरण द्वारा किया जाना चाहिए, जिसमें– संवैधानिक मूल्य, बच्चों को निर्भय बनाने, बाल केन्द्रित, गतिविधि आधारित प्रक्रिया को अपनाया जाय।

पाठ्यक्रम को बनाने में निम्नलिखित बिन्दुओं की ओर ध्यान देना चाहिए–

- पाठ्यक्रम का चयन शिक्षार्थी की मानसिक आयु, अभिरूचि का स्तर और शिक्षार्थी के वर्तमान एवं भविष्य के जीवन में उपयोगिता के आधार पर किया जाना चाहिए।
- प्रत्येक बालक को उसके क्षमता स्तर और अभिरूचि के अनुरूप उपयोगी अनुभव मिलना चाहिए, जिससे कि वह जीवन की परिस्थितियों में महत्वपूर्ण अवधारणाओं को ग्रहण करने में सफल हो सके।
- क्रियाकलाप वास्तविक जीवन की समस्याओं पर आधारित हों और शिक्षार्थी के जीवन में उनका महत्व होना चाहिए।
- प्रयोग एवं शोध की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- रटने की विधि के स्थान पर स्वतः खोजने की विधि पर बल दिया जाना चाहिए।
- दैनिक जीवन में समस्याओं का विश्लेषण करने, उन्हे हल करने एवं व्यवसायों में प्रवेश हेतु आवश्यक ज्ञान और कौशल पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

Dr. Priti Pati Singh

पाठ्यक्रम के मानदण्ड (Criteria of Curriculum)

पाठ्यक्रम के मुख्यतः चार मानदण्ड बताये गये हैं जो निम्नलिखत हैं:

- **विषय (Subject) :** पाठ्यक्रम के अन्तर्गत सम्मिलित किये जाने में विषय–कला, संगीत, साहित्य, भाषा (हिन्दी, अंग्रेजी) धार्मिक शिक्षा, इतिहास, भूगोल, सामाजिक विज्ञान, भौतिक विज्ञान, जीव–विज्ञान, गणित, शारीरिक शिक्षा, अर्थषास्त्र, मनोविज्ञान, समाजषास्त्र, स्वास्थ्य–शिक्षा आदि।
- **अनुभव (Experiences):** पाठ्यक्रम में अधोलिखित अनुभवों को महत्व दिया जाता है–सर्जनात्मक अनुभव, धार्मिक तथा आध्यात्मिक, ललित कला, मानवता, सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक(समय तथा स्थान) भौतिक–व्यक्तिगत तथा सामूहिक सहकारी, सम्प्रेषण, अभिव्यक्ति, गणित सम्बन्धी, वैज्ञानिक, औद्योगिक, आर्थिक, मूल्यांकन सम्बन्धी, उत्पादन सम्बन्धी आदि।
- **कौशल(Skills):** लिखना, पढ़ना, देखना, बोलना, निरीक्षण करना, विभिन्न प्रकार के यंत्रों को प्रयोग करने का कौशल, सुलेख, सम्प्रेषण का कौशल, अशाब्दिक, सम्प्रेषण का कौशल, मानसिक क्रियायें, मापन, मूल्यांकन, गणना, समस्या समाधान, अनुमान लगाना, सामाजिक कौशल–स्वीकार करने का कौशल, कार्य करना, अन्तःक्रिया, निर्णय करना, विभेदीकरण, ललित कला, शिल्प तथा आर्ट के कार्य करना आदि।
- **अभिवृत्तियाँ (Attitudes):** अभिवृत्तियों को भी पाठ्यक्रम के प्रारूप में सम्मिलित किया जाता है– आत्म–विश्वास, स्वःमूल्यांकन, स्वः अनुशासन, ईमानदारी, सच्चाई, संवेदनशीलता, वस्तुनिष्ठता, आत्मा–चिंतन, कल्पनाशक्ति, समायोजन की प्रकृति, एकाग्रचित होने की प्रवृत्ति आदि।

पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्तः

पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय सबसे प्रमुख बात यह है कि पाठ्यक्रम में उन्हीं विषयों, क्रियाओं एवं विषयवस्तु को सम्मिलित किया जाये, जिनका किसी न किसी रूप में बच्चों के वर्तमान जीवन से सम्बन्ध हो तथा साथ ही वे उनके भावी जीवन के लिए उपयोगी भी हो। जिससे बच्चों का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, व्यवसायिक, सांस्कृतिक, चारित्रिक एवं नैतिक विकास हो सके।
तो आइये पाठ्यक्रम निर्माण के विभिन्न सिद्धान्तों के बारे में जाने–

- **लचीलेपन का सिद्धान्तः** पाठयक्रम लचीला होना चाहिए ताकि विद्यार्थी व्यक्तिगत भिन्नताओं के आधार पर अपनी व्यक्तिगत रूचियों, प्रवृतियों, आवश्यकताओं, क्षमताओं के अनुसार सीख सकें। यदि पाठ्यक्रम कठोर होगा तो वह सम्पूर्ण छात्रों के लिए उपयोगी नहीं होगा। इसमें शिक्षा मनोविज्ञान की सहायता से यह दोष दूर हो सकता है।

- **क्रिया केन्द्रित सिद्धान्तः** पाठ्यक्रम क्रिया–केन्द्रित(Activity Centred) होना चाहिए। इस कारण पाठ्यक्रम 'करके सीखना' (Learning by Doing) के सिद्धान्त पर आधारित होना चाहिए।

- **बाल केन्द्रित होनाः** पाठ्यक्रम बाल केद्रित होना चाहिए अर्थात छात्र की जिज्ञासा एवं रूचियों का ध्यान रखकर छात्र की आवश्यकताओं के अनुरूप ही पाठ्यक्रम का निर्माण करना चाहिए। पाठ्यक्रम निर्माण में छात्र की रूचियों, आवश्यकताओं, प्रवृत्तियों, अभिवृत्तियों, क्षमताओं, आयु एवं बुद्धि आदि पर ध्यान देना अति आवश्यक है।

Dr. Praja Pati Singh

- **सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के विकास का सिद्धान्तः** पाठ्यक्रम का निर्माण इस प्रकार करना चाहिए जिससे कि बच्चों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का विकास हो सके तथा वे एक कशल सामाजिक नागरिक बन सकें।

- **व्यक्तिगत भिन्नताओं को ध्यान में रखनाः** सभी छात्रों की उपलब्धि एक समान नहीं होती है। कुछ पिछडे हुए (कम बुद्धि के) तथा कुछ प्रतिभाशाली छात्र होते हैं। अतः दोनों प्रकार के छात्रों की प्रतिभाओं को ध्यान में रखकर कुछ सरल विषयवस्तु तथा कुछ कठिन विषय–वस्तु प्रस्तुत करनी चाहिए, जिससे कमजोर तथा प्रतिभावान छात्र अपनी जिज्ञासाओं को पूर्ण रूप से सन्तुष्ट कर सकें।

- **सृजनात्मक एवं रचनात्मक सिद्धान्तः** पाठ्यक्रम में ऐसी विषयवस्तु का चयन किया जाना चाहिए जिससे कि बच्चों में रचनात्मक तथा सृजनात्मक कौशलों का विकास हो सके।

- **मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तः** इस सिद्धान्त के अनुसार पाठ्यक्रम बाल–केन्द्रित होना चाहिए। बाल–केन्द्रित से आशयः बच्चों के मानसिक स्तर, आवश्यकता ,रूचि, क्षमता, आयु, जिज्ञासा, योग्यता और उनकी सक्रिय सहभागिता को प्राथमिकता देना।

- **उच्च कक्षाओं की आवश्यकता पूर्ति का सिद्धान्तः** पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय उन सभी प्रकरणों, नियमों एवं सिद्धान्तों आदि को उचित स्थान देना चाहिए, जिनकी आवश्यकता उच्च ज्ञान की प्राप्ति में तथा बच्चों के भावी जीवन में उपयोगी हो। जब बच्चे निम्न कक्षा को उत्तीर्ण करके अगली (उच्च) कक्षा में जाते हैं तो उन्हें नवीन ज्ञान को प्रारम्भ से ही सीखना पड़ता है परन्तु यदि उच्च कक्षा में दिये जाने वाले ज्ञान का कुछ प्रारम्भिक ज्ञान या परिचय दे दिया जाये, तो बालकों को उच्च कक्षाओं में अधिक कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः निम्न कक्षाओं का पाठ्यक्रम उच्च कक्षाओं के ज्ञान एवं आवश्कताओं को ध्यान में रखकर ही बनाना चाहिए।

- **सह–सम्बन्धता का सिद्धान्तः** पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय बच्चों के व्यावहारिक जीवन की समस्याओं, अध्ययन के अन्य विषयों, समाज की नवीन आवश्यकताओं आदि के साथ सह सम्बन्ध की मुख्य बातों पर ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक होना चाहिए।

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53) ने पाठ्यक्रम निर्माण के निम्नलिखित सिद्धान्तों का स्पष्टीकरण किया है– विविधता का सिद्धान्त, लचीलेपन का सिद्धान्त, समुदाय से सम्बन्धित सिद्धान्त, अवकाश के समय का सदुपयोग से सम्बन्धित सिद्धान्त, पाठ्यक्रम जीवन से सम्बन्धित, विभिन्न क्रियाओं पर आधारित हो एवं समाज की आवश्यकताओं के अनुकूल होना चाहिए आदि।

(ब) पाठ्यचर्या (Syllabus):

पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम के उस पक्ष को कहा जाता है जिसे कक्षा में प्रयोग हेतु व्यवस्थित किया जाता है। पाठ्यचर्या शब्द की उत्पति लैटिन शब्द से हुई है जिसका अर्थ होता है दौड़ का मैदान। यहाँ दौड़ यानी रेस शब्द, समय और मार्ग का द्योतक है। पाठ्य–विवरण की उपयोगिता इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें सम्मिलित प्रत्यय, प्रकरण तथा ज्ञान, शिक्षण के उद्देष्यों की प्राप्ति में कहाँ तक सहायक हैं। पाठ्यचर्या को वास्तव में एक तय समय के अंदर दिए हुए पाठ्यक्रम को पूरा किए जाने से जोड़कर देखा जाता है। विद्यार्थियों को दिये जाने वाले ज्ञान व अनुभवों को एक निष्चित समय में कक्षाध्यापन के दौरान विषयवस्तु को सुव्यवस्थित करके शिक्षण करना ही पाठ्यचर्या या पाठ्य–विवरण कहलाता है।

Dr. Praja Pati Singh

गुड के शिक्षा–शब्दकोष के अनुसार पाठ्यचर्या एक कार्य प्रणाली संदर्शिका होती है, जो किसी कक्षा को किसी विषय के शिक्षण में सहायता के लिए किसी विद्यालय विशेष अथवा व्यवस्था के लिए तैयार की जाती है। इसके अन्तर्गत पाठ्यक्रम के लक्ष्य, अपेक्षित परिणाम, अध्ययन सामग्री की प्रकृति, विस्तार तथा उपयुक्त सहायक सामग्री एवं पाठ्य–पुस्तकों के साथ–साथ अनुपूरक पुस्तकों, शिक्षण विधियों, सहगामी क्रियाओं तथा उपलब्धि मापन के सुझाव भी सम्मिलित किये जाते हैं।

समय–समय पर हमारे देश में पाठ्यचर्या का वर्णन वैदिककालीन, बौद्धिकालीन, मध्यकालीन, आधुनिक पाठ्यचर्या के अन्तर्गत किया गया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात की पाठ्यचर्या के अन्तर्गत माध्यमिक शिक्षा आयोग(1952–53), कोठारी शिक्षा आयोग(1964–66) तथा शिक्षा नीति 1968, नयी शिक्षा नीति 1986 एवं 1992 के संशोधन एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में किया गया।

पाठ्यचर्या का विकासः

पाठ्यचर्या का विकास 1890 के दशक से शुरू हुआ। पाठ्यचर्या पर केन्द्रित पहली पुस्तक ''दि कॅरिकुलम फ्रैकलिन बॉबिट'' 1918 में प्रकाशित हुई तथा उसके बाद 1924 में ''हाउ टु मेक कॅरिकुलम'' छपी। अमेरिका ने 1926 में नेशनल सोसाइटी ऑफ द स्टडी ऑफ एजुकेशन ने ''दि फाउंडेशन एंड टेकनिक ऑफ कॅरिकुलम कंस्ट्रक्शन'' विषय पर वार्षिक पुस्तिका प्रकाशित की। इस तरह 1890 से शुरू होकर पाठ्यचर्या का विकास आंदोलन पूरी दुनिया का एक सशक्त आंदोलन बन गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 के सुझावों को ध्यान में रखते हुए जब एन.सी.ई.आर.टी. ने अपना ''कॅरिकुलम फॉर 10 ईयर स्कूल'' प्रकाशित किया, तो उसमें इस बात पर बल दिया गया कि स्वचालन की इस सदी के आगमन से नयी औद्योगिक क्रांति की शुरुआत के चिह्न दिख रहे हैं। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा; एन.सी.एफ.एस.ई..2000) का दस्तावेज भी इन भावनाओं को प्रकट करता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 (**National Curriculum Framework** 2005) के अनुसार पाठ्यचर्या निर्माण के निर्देशक सिद्धांतों एवं ज्ञान के उपागम (Approach) संबंधी कुछ सिद्धान्त दिये गये, जो इस प्रकार हैं–

(अ) पाठ्यचर्या निर्माण के निर्देशक सिद्धांतः

हमारे शैक्षिक उददेश्यों और शिक्षा की गुणवत्ता में आज गहरी विकृति आ गई है। इसका यह प्रमाण है कि शिक्षा बच्चों और उनके माँ–बाप के लिए तनाव और बोझ का कारण बन गई है। इस विकृति को दुरस्त करने के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में पाठ्यचर्या निर्माण के पांच निर्देशक सिद्धांत रखे गये हैं जो निम्नानुसार हैं:

(1) ज्ञान को स्कूल के बाहरी जीवन से जोडना
(2) पढ़ाई रटन्त प्रणाली से मुक्त हो, यह सुनिश्चित करना।
(3) पाठ्यचर्या का इस तरह संवर्धन कि किया जाय वह बच्चों को चहूँमुखी विकास के अवसर मुहैया करवाए बजाए इसके कि पाठ्यपुस्तक–केन्द्रित बन कर रह जाए।
(4) परीक्षा को अपेक्षाकृत अधिक लचीला बनाना और कक्षा की गतिविधियों से जोडना।
(5) एक ऐसी अधिभावी पहचान का विकास जिसमें प्रजातांत्रिक राज्य–व्यवस्था के अंतर्गत राष्ट्रीय चिंताएं समाहित हों।

Dr. Praja Pati Singh

(ब) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में ज्ञान के 'उपागम (Approach) संबंधी कुछ सिद्धान्त दिये गये, जो निम्नप्रकार से हैं–

- विषय द्वारा दिए गए कौशलों के आधार पर सामाजिक यथार्थ और परिवेश के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास।
- स्थानीय के साथ जुड़ाव, ज्ञान को संदर्भ में रखा जाय, ताकि उसकी प्रासंगिकता और अर्थपूर्णता महसूस की जा सके, स्कूल के बाहर अनुभवों की पुष्टि हो पाए, अवलोकन, वर्गीकरण, श्रेणियाँ बनाकर, प्रश्न पूछ कर इन अनुभवों के संबंध में तर्क करके स्वयं सीखा जा सके।
- विभिन्न अनुशासनों में अंतर्संबंध देखना और ज्ञान में अंतनिर्हित जुड़ाव को समझना।
- जाँच के खुलेपन व उपयोगिता को पहचानना और तथ्यों की अस्थायी प्रकृति को समझना।
- स्थानीय ज्ञान, स्थानीय क्षेत्र के रिवाजों व प्रथाओं के साथ जुड़ना और जहाँ भी संभव हो इन्हें स्कूली ज्ञान के साथ जोड़ना।
- प्रश्न करने को प्रोत्साहन देना और नए प्रश्नों की तरफ बढ़ने के लिए अवसर प्रदान करना।
- कक्षीय प्रक्रियाओं में 'समानता' के मुद्दों के प्रति संवेदनशील होना और कई समूहों द्वारा ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों को सीख पाने को लेकर स्थापित रूढ़िबद्ध धारणाओं और भेदभाव के प्रति सजग होना (उदाहरण– लड़कियों को क्षेत्राधारित परियोजनाएँ न देना, नेत्रहीनों को गणित सीखने से वर्जित करना, इत्यादि)
- कल्पनाशीलता को विकसित करना।

(स) **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार पाठ्यचर्या के क्षेत्र, स्कूल की अवस्थाएं और आकलनः**

इसके अनुसार पाठ्यचर्या के क्षेत्र क्रमशः भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला शिक्षा एवं स्वास्थ्य व शारीरिक शिक्षा, काम और शिक्षा तथा शांति के लिए शिक्षा आदि होनी चाहिए। स्कूल में सीखने के लिए आवास की पर्याप्ति व्यवस्था होनी चाहिए। समय–समय पर शिक्षार्थियों का आकलन, शिक्षण के क्रम में आंकलन एवं मूल्यांकन होना चाहिए।

उपागम (Approach): उपागम शब्द अंग्रेजी के Approach शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। आक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार अंग्रेजी के एप्रोच शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है– to come near, to the act of drawing near अर्थात निकट लाना था निकट जाने की क्रिया। हिन्दी में उपागम शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है– उप + आगम। उप का अर्थ होता है– समीप तथा आगम का अर्थ होता है– पहुँचना। इस प्रकार शब्द–रचना की दृष्टि से उपागम का अर्थ हुआ नजदीक या निकट ले जाने जाना। शिक्षाशास्त्र में उपागम का अर्थ है वह मार्ग जिसके द्वारा शिक्षा–सामग्री के निकट जाया जाता है। दूसरे शब्दों में शिक्षा के उपागम से हमारा तात्पर्य उन विधाओं, दृष्टिकोण एवं शिक्षा शास्त्र के अनुशीलन की प्रक्रिया से है। जिसकी सहायता से शिक्षाषास्त्र के अनुशीलन की प्रक्रिया से है जिसकी सहायता से शिक्षाषास्त्र की प्रतिपाद्य सामग्री और समस्याओं का विश्लेषण, विवेचन और अध्ययन किया जाता है।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के अनुसार पाठ्यक्रम एवं पठनपाठन सामग्री का निर्माण करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिएः

पाठयक्रम का निर्धारण अकादमिक प्राधिकरण द्वारा किया जाना चाहिए, जिसमें– संवैधानिक मूल्य, बच्चों को निर्भय बनाने, बाल केन्द्रित, गतिविधि आधारित प्रक्रिया को अपनाया जाए। पठन–पाठन सामग्री एवं उपकरण, कक्षा के अनुरूप होनी चाहिए। प्रत्येक शाला में एक पुस्तकालय हो, जिसमें समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, कहानियों की किताबें तथा खेलकूद हेतु आवश्यक सामग्री एवं उपकरण होना चाहिए। यथासंभव मातृ भाषा में शिक्षा दी जानी चाहिए। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) की सुविधा सम्मिलित होनी चाहिए।

Dr. Praja Pati Singh

पाठ्यक्रम तथा पाठ्यचर्या में अन्तर (Difference between Curriculum and Syllabus):

जब पाठ्यक्रम निर्माण का कार्य पूर्ण हो जाता है तो पूर्ण होने पर ही पाठ्यचर्या का विकास प्रारम्भ हो जाता है तथा इसकी अनिवार्यता को स्वीकारना पडता है। सुव्यवस्थित एवं सुनियोजित पाठयचर्या के आधार पर ही किसी पाठयक्रम तक पहुॅचा जा सकता है तथा उसमें सार्थक लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

अतः सीखने की इकाइयों का कक्षा एवं विषयवार क्रम निर्धारण ही पाठ्यक्रम है। परन्तु पाठ्यक्रम निर्माण की प्रक्रिया पाठ्यचर्या है। पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्या में अन्तर को हम निम्नलिखित विन्दुओं के माध्यम से स्पष्ट कर सकते हैं–

पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या में अंतर

- पाठ्यक्रम एक प्रकार का अनुभव है जो पूरी शिक्षा के दौरान विद्यार्थी को मिलता है. इसमें विद्यार्थी को पता चलता है कि किस आयु में उसे कितने अनुशासन के साथ अपनी शिक्षा लेनी है. वहीं पाठ्यचर्या में विद्यार्थी को बताया जाता है की उन्हें किस विषय की जानकारी किस कक्षा में प्राप्त होगी।
- पाठ्यक्रम का चयन शिक्षार्थी की वर्तमान आयुसकी अभिरुचि का स्तर और उसके वर्तमान और भविष्य को ध्यान में रख के किया जाता है और वहीं पाठ्यचर्या में विद्यार्थी के आयु और उसकी कक्षा के अनुसार उसके सिलेवस को निर्धारित कर के किया जाता है।
- किसी भी विद्यार्थी की रूचि और उसकी समझने की क्षमता के अनुसार पाठ्यक्रम का स्तर होना चाहिए. पाठ्यचर्या में किसी विद्यार्थी को उसकी समझने की क्षमता के अनुसार उसे शिक्षा का ज्ञान देना चाहिए।
- पाठ्यक्रम में प्रयोग और शोध पे ध्यान दिया जाता है जबकि पाठ्यचर्या में उन्हें किताबों द्वारा कैसे अच्छे से ज्ञान दिया जा सकता है इस्पे ध्यान दिया जाता है।
- पाठ्यक्रम में कुछ चीजों को बदलने में भी ध्यान देना चाहिए जैसे की किताबों को रटने की जगह कुछ खोज करने में ध्यान देना चाहिए और पाठ्यचर्या में उन किताबों में कुछ ऐसे एक्सरसाइज बनानी चाहिए जिसके लिए विद्यार्थी को स्वयं खोज करने की आवश्यकता हो।
- पाठ्यक्रम को अंग्रेजी में करिकुलम कहते हैं और पाठ्यचर्या को अंग्रेजी में सिलेबस कहते हैं।
- पाठ्यक्रम के अंदर पाठ्यचर्या आता हैपाठ्यचर्या पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण अंग माना जाता है।
- पाठ्यक्रम में शिक्षा केवल लिखित में ही नहीं दी जाती है बल्कि कुछ अनुशासनउठने बैठने का ढंग, नैतिकता आदि भी सिखाई जाती है. जबकि पाठ्यचर्या में आपको किताबों का ज्ञान और कई विषयों की जानकारी दी जाती है।
- पाठ्यचर्या कुछ नियमों तक सीमित है जबकि पाठ्यक्रम की कोई सीमा नहीं है।

1.3 अपनी प्रगति की जॉच करें:

अपनी प्रगति की जॉच करें
नोटः (अ) अपना उत्तर प्रश्न के नीचे दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।
(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से कीजिए।
1. पाठ्यक्रम क्या हैं? माध्यमिक शिक्षा आयेाग के अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण के कौन–कौन से सिद्धान्त हैं?

.....

2. पाठ्यचर्या क्या है? पाठ्यचर्या पर केन्द्रित पहली पुस्तक कब प्रकाशित हुई ?

.....

.....

3. पाठ्यक्रम तथा पाठ्यचर्या में क्या अन्तर है?

.....

.....

1.3 सारांश

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- पाठ्यक्रम को समझ गये कि यह एक व्यापक (broader) शब्द है, जो शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता है। जिसका निर्धारण अकादमिक प्राधिकरण द्वारा किया जाना चाहिए, जिसमें– संवैधानिक मूल्य, बच्चों को निर्भय बनाने, बाल केन्द्रित, गतिविधि आधारित प्रक्रिया को अपनाया जाय।
- पाठ्यक्रम निर्माण के विभिन्न सिद्धान्तों जैसेः लचीलेपन, क्रिया केन्द्रित, बाल केन्द्रित, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के विकास, व्यक्तिगत भिन्नताओं को ध्यान में रखना, सृजनात्मक एवं रचनात्मक, मनोवैज्ञानिक ,उच्च कक्षाओं की आवश्यकता पूर्ति, एवं सह–सम्बन्धता आदि के सिद्धान्तों के बारे में जान सके।
- पाठ्यचर्या को समझ गये कि इस शब्द की उत्पति लैटिन शब्द से हुई है जिसका अर्थ होता है दौड़ का मैदान। यहाँ दौड़ यानी रेस शब्द, समय और मार्ग का द्योतक है। पाठ्यचर्या को वास्तव में एक तय समय के अंदर दिए हुए पाठ्यक्रम को पूरा किए जाने से जोड़कर देखा जाता है। विद्यार्थियों को दिये जाने वाले ज्ञान व अनुभवों को एक निश्चित समय में कक्षाध्यापन के दौरान विषयवस्तु को सुव्यवस्थित करके शिक्षण करना ही पाठ्यचर्या या पाठ्य–विवरण कहलाता है।
- पाठ्यचर्या का विकास के बारे में जान गये कि इसका विकास 1890 के दशक से शुरू हुआ। जिसकी पहली केन्द्रित पुस्तक ''दि कॅरिकुलम फ्रैकलिन बॉबिट'' 1918 में प्रकाशित हुई तथा उसके बाद 1924 में ''हाउ टु मेक कॅरिकुलम'' छपी।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार पाठ्यचर्या निर्माण के निर्देशक सिद्धांतों एवं ज्ञान के उपागम (Approach) संबंधी कुछ सिद्धान्तों के बारे में जान गये एवं इसके अनुसार पाठ्यचर्या के क्षेत्र, स्कूल की अवस्थाएं और आकलन के बारे में अध्ययन कर सके।
- शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के अनुसार पाठयक्रम का निर्धारण अकादमिक प्राधिकरण द्वारा किया जाना चाहिए, जिसमें– संवैधानिक मूल्य, बच्चों को निर्भय बनाने, बाल केन्द्रित, गतिविधि आधारित प्रक्रिया को अपनाया जाए। पठन–पाठन सामग्री एवं उपकरण, कक्षा के अनुरूप होनी चाहिए। प्रत्येक शाला में एक पुस्तकालय हो, जिसमें समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, कहानियों की किताबें तथा खेलकूद हेतु आवश्यक सामग्री एवं उपकरण होना चाहिए आदि के बारे में जान सके।

1.4 अभ्यास प्रश्न/चिन्तनात्मक प्रश्नः

1. पाठ्यक्रम क्या है? पाठ्यक्रम को बनाने में किन–किन बिन्दुओं की ओर ध्यान देना चाहिए। स्पष्ट करें।
2. पाठ्यक्रम निर्माण के कौन–कौन से सिद्धान्त हैं? लिखिए एवं आपके अनुसार इकाई में दिये गये सिद्धांतों के अलावा कौन से सिद्धांत होने चाहिए।
3. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार पाठ्यचर्या निर्माण के निर्देशक सिद्धांतों एवं ज्ञान के उपागम (Approach) संबंधी कौन–कौन से सिद्धान्त दिये गये हैं? लिखिए।
4. उपागम से क्या तात्पर्य है?

Dr. Priya Pati Singh

1.5 प्रगति की जॉच के लिए उत्तर :

1. पाठ्यक्रम एक व्यापक (broader) शब्द है, जो शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता है। बच्चों के सभी अनुभव जो विद्यालय के वातावरण में, घर के वातावरण में, समुदाय के साथ या फिर अन्य माध्यमों से प्राप्त अनुभव आदि सभी का सम्पूर्ण समावेश पाठ्यक्रम कहलाता है। माध्यमिक शिक्षा आयेाग के अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण के मुख्य सिद्धांतः विविधता का सिद्धान्त, लचीलेपन का सिद्धान्त, समुदाय से सम्बन्धित सिद्धान्त, अवकाश के समय का सदुपयोग से सम्बन्धित सिद्धान्त, पाठ्यक्रम जीवन से सम्बन्धित, विभिन्न क्रियाओं पर आधारित हो एवं समाज की आवश्यकताओं के अनुकूल हो आदि हैं।

2. पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम के उस पक्ष को कहा जाता है जिसे कक्षा में प्रयोग हेतु व्यवस्थित किया जाता है। इसमें अन्तर्वस्तु के अतिरिक्त शिक्षकों, छात्रों तथा प्रकाशकों के उपयोगार्थ सहायक सामग्री एवं कार्य–विधि आदि के निर्देश भी सम्मिलित होते हैं। विद्यार्थियों को दिये जाने वाले ज्ञान व अनुभवों को एक निश्चित समय में कक्षाध्यापन के दौरान विषयवस्तु को सुव्यवस्थित करके शिक्षण करना ही पाठ्यचर्या या पाठ्य–विवरण कहलाता है। पाठ्यचर्या पर केन्द्रित पहली पुस्तक ''दि कॅरिकुलम फ्रैकलिन बॉबिट'' 1918 में प्रकाशित हुई।

3. जिस समय पाठ्यक्रम निर्माण का कार्य पूर्ण हो जाता है तो पूर्ण होने पर ही पाठ्यचर्या का विकास प्रारम्भ हो जाता है तथा इसकी अनिवार्यता को स्वीकारना पडता है। सुव्यवस्थित, और सुनियोजित पाठयचर्या के आधार पर ही किसी पाठयक्रम तक पहुॅचा जा सकता है तथा उसमें सार्थक लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

अतः सीखने की इकाइयों का कक्षा एवं विषयवार क्रम निर्धारण ही पाठ्यक्रम है। परन्तु पाठ्यक्रम निर्माण की प्रक्रिया पाठयचर्या है।

विशेषः आपको हमारे द्वारा दी गयी जानकारी कैसी लगी और आपके कितना काम आयी हमे बताना न भूले और यदि आपके मन में कोई प्रश्न कोई सुझाव या कोई शिकायत हो तो हमे नीचे दिए गए कमेंट बॉक्स में बता सकते हैं हम उसे सुलझाने की कोशिश करेंगे।

1.9 सन्दर्भ / अन्य अध्ययनः

- एन.सी.ई.आर.टी. (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान परिषद्, नई दिल्ली
- एन.सी.ई.आर.टी. (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005, पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तक का आधार पत्र, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।
- शिक्षा विमर्श पत्रिका (2013). राजस्थान की नई पाठ्य पुस्तकें, जयपुर।
- पाठक, पी.डी. (2015). शिक्षा, समाज, पाठ्यचर्या और शिक्षार्थी, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- पाल, हंसराज एवं पाल, राजेन्द्र (2006), पाठ्यचर्याः कल, आज और कल, क्षिप्रा पब्लीकेशन, दिल्ली।
- आहूजा, राम (2004) सामाजिक अनुसंधान, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
- आर. ए. शर्मा (2005). पाठ्यक्रम विकास, इण्टरनशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ

Dr. Praj Pati Singh